

॥ॐ श्रीपरमात्मने नमः॥

शिवसंकल्पसूक्तम्

शुक्लयजुर्वेदः (अध्यायः ३४, मन्त्रः १-६)

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।

येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

अन्वयसहितवङ्गानुवादः – येन अमृतेन (ये अमृतस्वरूपेण द्वारा) इदम् सर्वम् (এই সমস্ত) भूतम् (अतीत) भुवनम् (वर्तमान) भविष्यत् (भविष्यत्) [बहु समूहके] परिगृहीतम् (ग्रहण करा যায়) येन (यार द्वारा) सप्तहोता (सप्तहोतायुक्त) यज्ञः (यज्ञ) तायते (बिछुत হয়) तन्मे (आमार সেই) मनः (मन) शिवसङ्कल्पम् अस्तु (कल्याणकारी संकल्पे नियुक्त থাকুক)।

व्याख्या – अस्य सूक्तस्य चतुर्थमन्त्रानुसारं मनसि सर्वकालज्ञानं अन्तर्हितमासीत्। यदा मनुष्याः आत्मचित्तस्य वशीभूतं कृत्वा अहं इति भावस्य दूरीकरणे समर्थाः जाताः तदा तैः सर्वकालज्ञानम् अनायासेन कर्तुं शक्यते। अर्थात् त्रिकालसम्बन्धवस्तुषु मनः प्रवर्तते इत्यर्थः। मनस्तावत् अन्तकरणस्य वृत्तिः एका। अनेन मनसा एव अग्निष्टोमादियज्ञाः विस्तार्यन्ते। तत्र यागेषु होतृमैत्रावरुणादयो सप्तहोतारः सन्ति। अतः तादृशं पवित्रकर्मणि युक्तं मम मनः शिवसङ्कल्पे सदा तिष्ठतु इति।

यस्मिन्नृचः साम यजुषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविंवाराः।

यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

अन्वयसहितवङ्गानुवादः – यस्मिन् ऋचः प्रतिष्ठिताः (যাহাতে ঋকবেদ প্রতিষ্ঠিত) যস্মিন্ সামযজুषি

রথনামৌ অরাঃ ইব (যেমন রাথচক্রের নাভিতে পংক্তি গুলি যুক্ত থাকে তেমন যাহাতে সাম ও যজুর্বেদ

প্রতিষ্ঠিত) প্রজানাং সৰ্ব চিত্তং যস্মিন্ অতম্ (মানুষের সমস্ত বিষয়ের জ্ঞান যে মনে ওতপ্রতো ভাবে যুক্ত থাকে) তন্মে (আমার সেই) মনঃ (মন) শিবসঙ্কল্পম্ অস্তু (কল্যাণকারী সঙ্কল্পে নিযুক্ত থাকুক)।

ব্যাক্ষ্য - শিবসংকল্পসূক্তস্য অস্মিন্ পশ্চমে মন্ত্রে ঋষিभिः পরমাत्मनः সমীপে শ্রেষ্ঠসংকল্পেষু মনঃ যথা স্যাৎ ইতি প্রার্থনা ক্রিয়তে। তৎ মনঃ কীদৃশমিতি প্রশ্নে উচ্যতে। ঋক্-সাম-যজুর্বেদঃ তস্মিন্ মনসি এৱ প্রতিষ্ঠিতঃ। কেন প্রকারেণ প্রতিষ্ঠিতঃ ইতি প্রশ্নে দৃষ্টান্তস্বৈকস্যোপস্থাপনং ক্রিয়তে যথা অরাঃ রথনামৌ মধ্যে প্রতিষ্ঠিতাঃ তদ্বৎ। অপি তু মনুষ্যাণাং সৰ্বপদার্থবিষয়জ্ঞানং যস্মিন্ অতং প্রোতং নিক্ষিপ্তং যথা পটে তন্তবঃ সন্তি তদ্বৎ মম মনঃ শিবসঙ্কল্পে সদা তিষ্ঠতু ইতি।

সুসারথিঃ অমীশুমিঃ বাজিনঃ ইৱ

হৃৎপ্রতিষ্ঠং যদাজিরং জবিষ্টং তন্মে মনঃ শিবসঙ্কল্পমস্তু ॥৬॥

অন্বয়সহিতবঙ্গানুবাদঃ - যৎ মনুষ্যান্ নেনীযতে (যে মন মানুষ কে এদিক ওদিক নিয়ে চলে যায়) সুসারথিঃ অমীশুমিঃ বাজিনঃ ইৱ (যেমন সুসারথি লাগাম সহকারে বেগবান অশ্বকে চালনা করে) যৎ আজিরম্ জবিষ্টম্ হৃৎপ্রতিষ্ঠম্ (যে মন জরারহিত, অতিশয় বেগবান ও হৃদয়স্থানে স্থিত) তন্মে (আমার সেই) মনঃ (মন) শিবসঙ্কল্পম্ অস্তু (কল্যাণকারী সঙ্কল্পে নিযুক্ত থাকুক)।

व्याख्या - शिवसंकल्पसूक्तस्य अस्मिन् षष्ठे मन्त्रे ऋषिभिः मनः उत्तमसारथिणा सह तुल्यते। एकः उत्तमसारथिः यथा द्रुतगामि-अश्वस्य एकस्य नियन्त्रणं क्रियते तद्वत् अस्माभिः अस्माकं मनसः नियन्त्रणं करणीयम् एकः सारथिः सदृशः। तेन अस्माकं चित्तस्य इतस्ततः द्रुतागमनं स्थिरं जातमित्याशयः। पुनः उच्यते एतत् मनः हृत्प्रतिष्ठमिति अर्थात् हृदये स्थितिः मनसः इति। तदनन्तरं कथयति एतत् मनः अजिरमिति अर्थात् जरारहितम् अर्थात् अस्माकं वाल्ययौवनस्थविरेषु समानमिति। तदनन्तरं कथयति एतत् मनः जविष्ठमिति अर्थात् अतीव गतिमयम् इति। वयुतः अस्माकं मनः गतिशीलमिति यावद् अतः तत् मम मनः शिवसङ्कल्पे सदा तिष्ठतु इति।